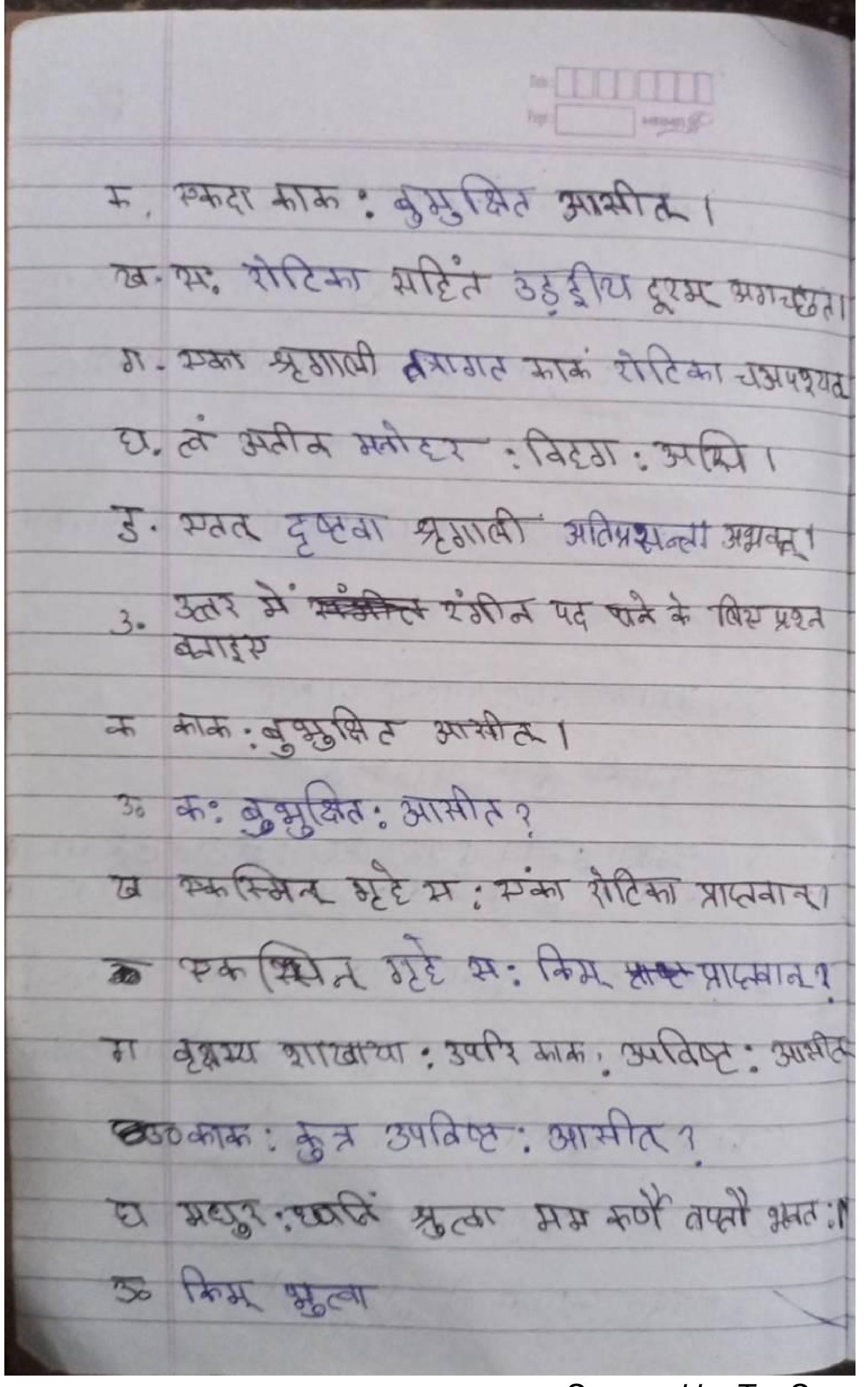


Scanned by TapScanner

| Date of Le |               |          | Date Com-      |
|------------|---------------|----------|----------------|
| 3,5        |               | भूखिका क | 2 शास्त्रार्था |
| 7-         | काक :         | ->       | 47347          |
| 2.         | 234.51        | >        | 524 913        |
| 3.         | क्रमिष्ठिः    | ->       | Fall.          |
| 40         | उपि           | ->       | 243            |
| Bo         | उपाविशात्     | ->       | बैंब बैठ गया   |
| 6.         | स्वाली        | ->       | CH 212         |
| 70         | तन्त्राद्वा   | ->       | वहाँ आर्र      |
| 8.         | अधाः          | ~        | AP.            |
| 9.         | विद्धाः       | 7        | पक्षी.         |
| 10.        | शुला          | 7        | सुनका          |
| 1/0        | स्तिवरीभ      | 7        | यस के खिरा     |
| D-         | ¥ श्रिटीड्य व | ~        | त्रेक <u>र</u> |
|            |               | ->       | 87121 213      |
|            |               |          |                |

| 1-7    | संस्कृत के उत्पर दी जिक                  |
|--------|--|
| (75    | क्राक : भ्रोजंत प्राप्तुं किस अक्शेत् १  |
|        | काक : श्रीजंत प्राप्तुं इतस्तर : उपविशाद |
| (ख्यः) | काकः कुत्र उपाविश्वतः                    |
| 30     | काकः रूक्तरा वृक्षय शाखायाः उपि उपविशत   |
| (919)  | र्सेशाली क्या अण्य प्रवार डे             |
| (30.)  | श्वाली ताम शोटिका प्राण्युं              |
| (CZ2)  | श्वााकी कुत्र अतिकार                     |
| 30     | शालाया उपरि काक: उपविष्ट: अर्थित यास्य   |
| CBO    | काकः किं श्रुता अतीव प्रभन्नः अपायतः     |
|        | काकः म्यप्रशास्य भुता अतीव प्रसन्न अधार् |
| (25)   | कस्य मुखात शिरिमा भुमी अवस र             |
| 30     | स्पर्य भेजात. शह मा अधिष्ठ अवद्य ।       |
| 2.     | सम्ब क्याम की देश किया =                 |

Scanned by TapScanner



Scanned by TapScanner

| Date      |  |
|-----------|--|
| 16Aboul76 |  |
|           |  |
|           | तार - अ दुर्वायम् जुन्देशस्य अभूर              |
| 1.        | 419 -2 418 43                                  |
| 2.        | GE14: -> 36951                                 |
| 3         | ज्यात्र स्ताप्त =                              |
| 4.        | साउनाम = ताउन ह                                |
| - 5       | प्रस्तार श्वण्हेत च पटवर के इकड़े से           |
| . 6.      | आहर्तः = ह्यायल                                |
| 1 .70     | विसमधोत = आश्चर्य से                           |
| 9.        | विस्मिन्य देखकर                                |
| 100       | स्थाराशार - जेल                                |
| 16        | उस्त्राप्त ने अत्य सम्                         |
| 150       | न्यमले न्यान                                   |
| .30       | ES 09.   |
| Mo        | 3 ES -> 2 -> 2 -> 2 -> 3 60                    |
| 150       | abs 7.   |
| 160       | वैकायां ने वीर से से                           |
| 17.       |  |
|           | समस्कृत में उत्या हि दी जिल् -                 |
| 3-        |  |
|           | अपरक्षमा: -यन्द्रशेखरं कम्य सम्मुखं आनयन्ति।   |
|           | आरक्षकाः न न्यशेखरं त्यापाधीशस्य सम्मम् पुर्व  |
| 30        | 3115 Gray : 28 51 1015 ecolor                  |
|           | 31101 4 1011                                   |
| 772       | न्य देश्याः सः आसी तः                          |
|           |  |
| 32        | नपदेवाताः असः नुद्रअनत्तिः भुधन्तः भिवेषः आक्ष |
| 20        |  |
|           |  |

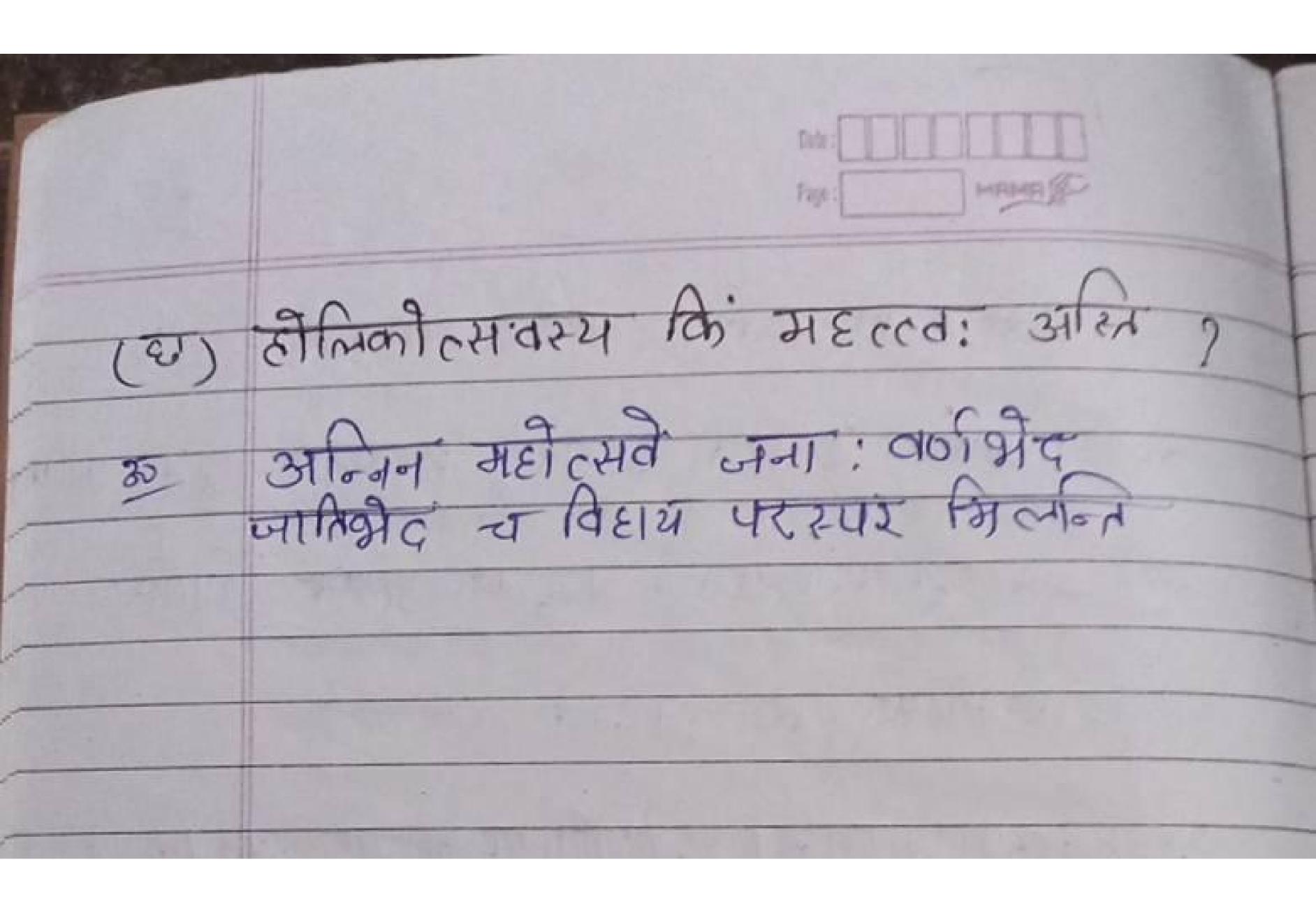
गः चल्द्रशेखरः कर्षां बल्दीकृतः र उठ चन्द्रशेखरं : यस मार असरोत अतः सः बन्धिकरः यः नन्द्रशेखरः कारी वन्दीक्तरः म्याम कि उ० चन्द्रशेखरः स्वनाम् आजदः अवदत् डे. रान्द्रशेखरः स्वताम स्विपेतुनीम किम् अक्षयका उठ चन्द्रशेखरः स्वितिनीम स्कान्त्र अक्षयस् य न्यायाद्यीया ने स्वेगांत किम् अकथयत्र ठ० अंय स्वतन्त्रतारी कीट्रशंः प्रमलः आसि हि अदा नब्देशका में भाराशाहा प भेरेम : वहि. उठ स्व जनाः तम परितः वेष्टयानी िरक्त स्थानों की पूर्वि कि कि कि ्का आरक्षकाः गरंशाखा शामाहीशस्य स्मिम् ख

(त्व) न्यन्द्रवृष्ट्वः क्रमः वादवायव्यातः भावत् नियानः ्या नावादातः चल्द्रकाखां स्थाया सहया त्रा तरितः चंद्रशेका युनः पुनः ज्ञातं अधार् दिन (उ.) बह्व: बालका : तस्य पादको : परानि। कः अवदत्र क श्रीमना अपं नालंशेखाः अस्ति। आरक्षाः ख कारा गार सब सम ग्रहमें असि चन्द्रशक मा अहम् इम पञ्चदशाक्षाद्यातात दण्डेयापि त्यसी क्ष में दृर्विभीतं पुनका विषमान्व हुदानीं स्वाविनयस्य कारावासा ही कारी (उ.) तयतु भारतभात्रम्। चन्द्रशेषर्

| 100  | 410-3            | 3     |                      |
|------|------------------|-------|----------------------|
| 20   | 9                | 18191 | Page: MRMR 185-      |
|      |                  |       |                      |
|      | 212-41-3         |       | Maria                |
|      | 9 (1)            | ~>    | E 41147              |
|      | 200              | -7    | 329-1                |
|      | राष्ट्रियाः      | -7    | 310501               |
|      | 31841399         | -7    | HISAL                |
|      | न्दल्य प्रमुः    | -7    | चौराही पर            |
|      | माक्ष खण्डम्     | ->    | विकड़ी का हकड़ा      |
|      | क्याप्य (न्ते    | -7    | स्थापित करते हैं     |
|      | 45/27            | 7     | जवारे हे             |
|      | 32590100         | 2     | डीम उच्छामरे हैं     |
|      | वाद स्व ता       | 77    | दोत्य                |
|      |                  | 7     | व्ययम्               |
|      | असमाधार् म् वारि | 5     | अवसर के अनुक्ष       |
|      | यवानां ग्रे      | ->    | जी की                |
|      | आहर भाषा         | 7     | मुद्द की             |
|      | रास्थाने         | -7    | धानं की नात्येयों की |
|      | 599905           | 7     | gled y               |
| 20.0 | व ह्य का         | 7     | व्याहाका.            |
|      | मिभादाय .        | 7     | लेकर.                |
|      | भेषिकित्वा       | ->    | 9-4167 - garde 3     |
|      | रञ्जयन्त         | -7    | क्रिप्स              |
|      | 310000           | -7    | 3919 8               |
|      | a region         | 7     | युद्धियों को         |
|      | 14 814           | -7    | ह्यां देन्द्र        |
|      |                  |       |                      |
|      |                  |       |                      |
|      |                  |       |                      |
|      |                  |       |                      |
|      |                  |       |                      |

अवकृत भे उत्पर स आम्भाम देवारत उत्मव्न मः प्रमुष्टः उत्मवं अधि उठ उत्तर दोलिकोत्यवः प्रमुखः उत्सवः आहित ख हो तिकोत्सव . स्वा भ्रवित ३ उठ का व्यानसम्य प्रियोगाया तियो भवति म वसल्य पञ्चमी कि केल आसे प्राविते ? 30 वसन्तप माधमस्ये भवति । हा मुला : काक्टरनञ्चत क्रे थे देव (च्य क समापत्रतत्र नामुख्यचीण अत्यास्थलेणुन काश्व 3 ना अपरिदेवसे बालका : युवा: ना किं कुर्वान्ते ? अणरिववर्से बालका : युवा : च खतपति जीला विवर्णन जले में लियता मच्छत : जनार परिव्यितार्ग वयस्याम च २०जनित

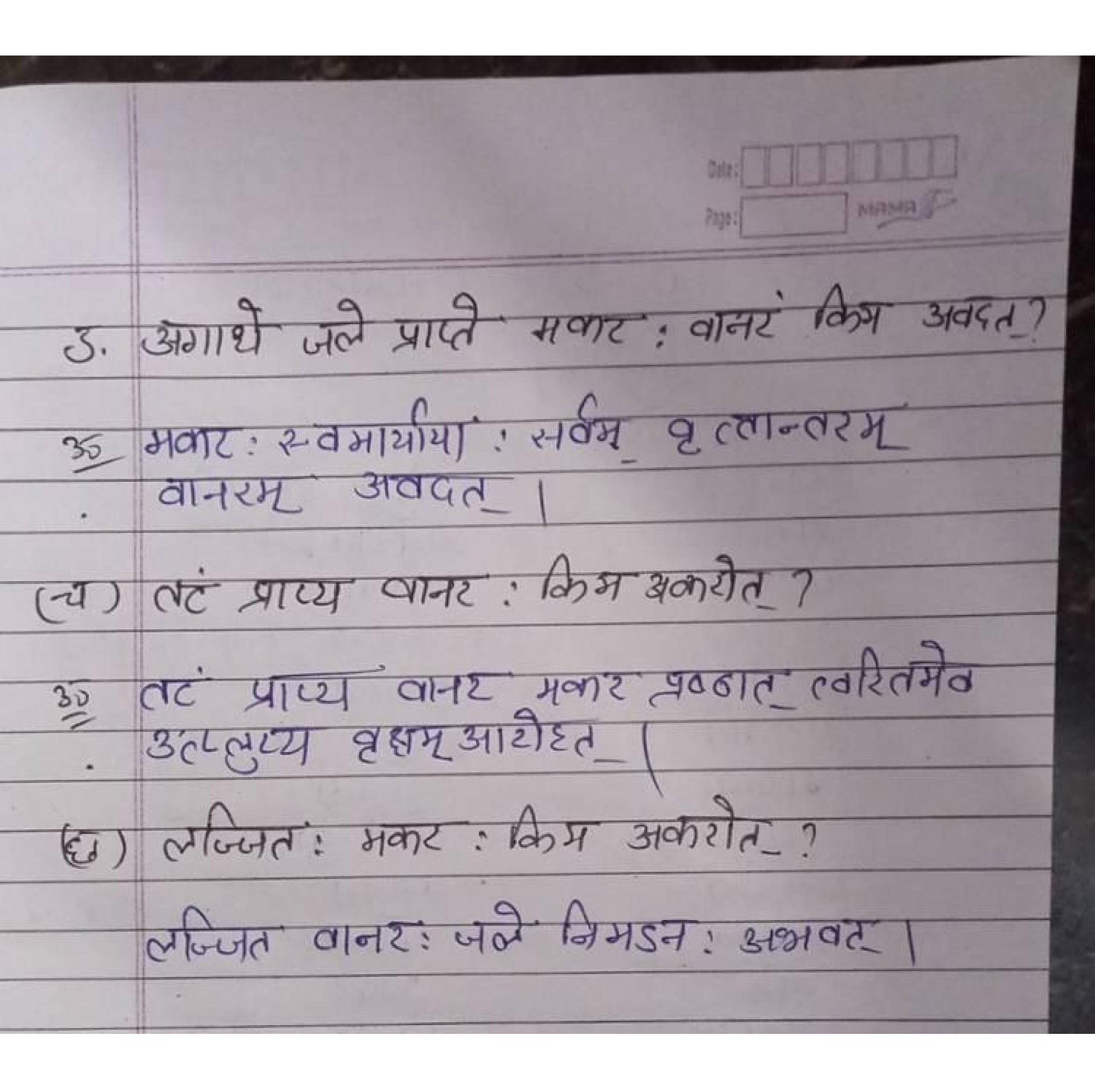
Scanned by TapScanner



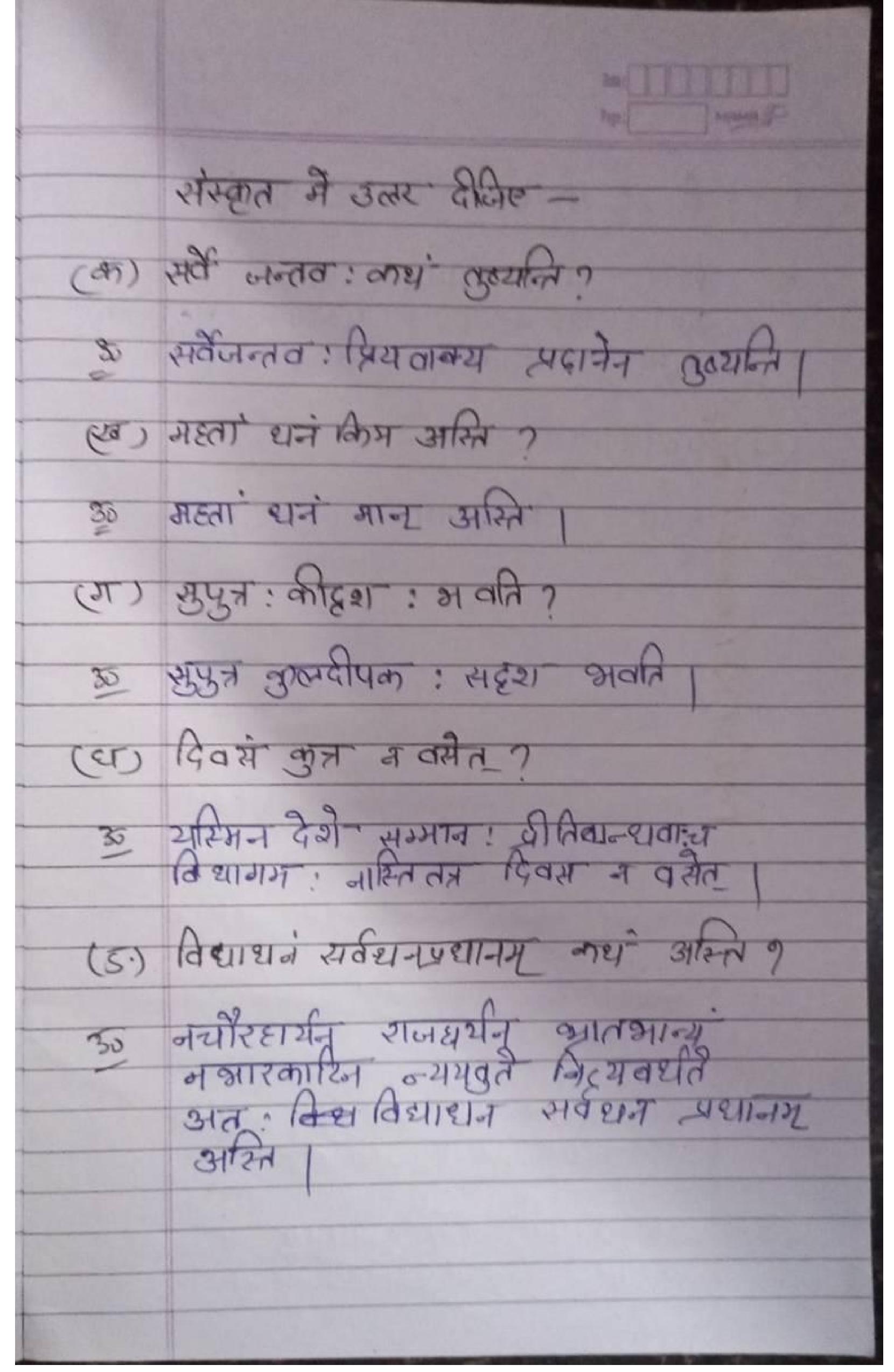
410-4 अत्य वानाने वानरः 31041211: यवित्त अशानी and HOTE 131542E1 उसकी अपर men - men थदा - कादा Popole 21 Man wanz SH Hanis अविशिष्टारी ra lous अ म्ट्यामि सहत्पापं वड़ा पाप केसे असकी

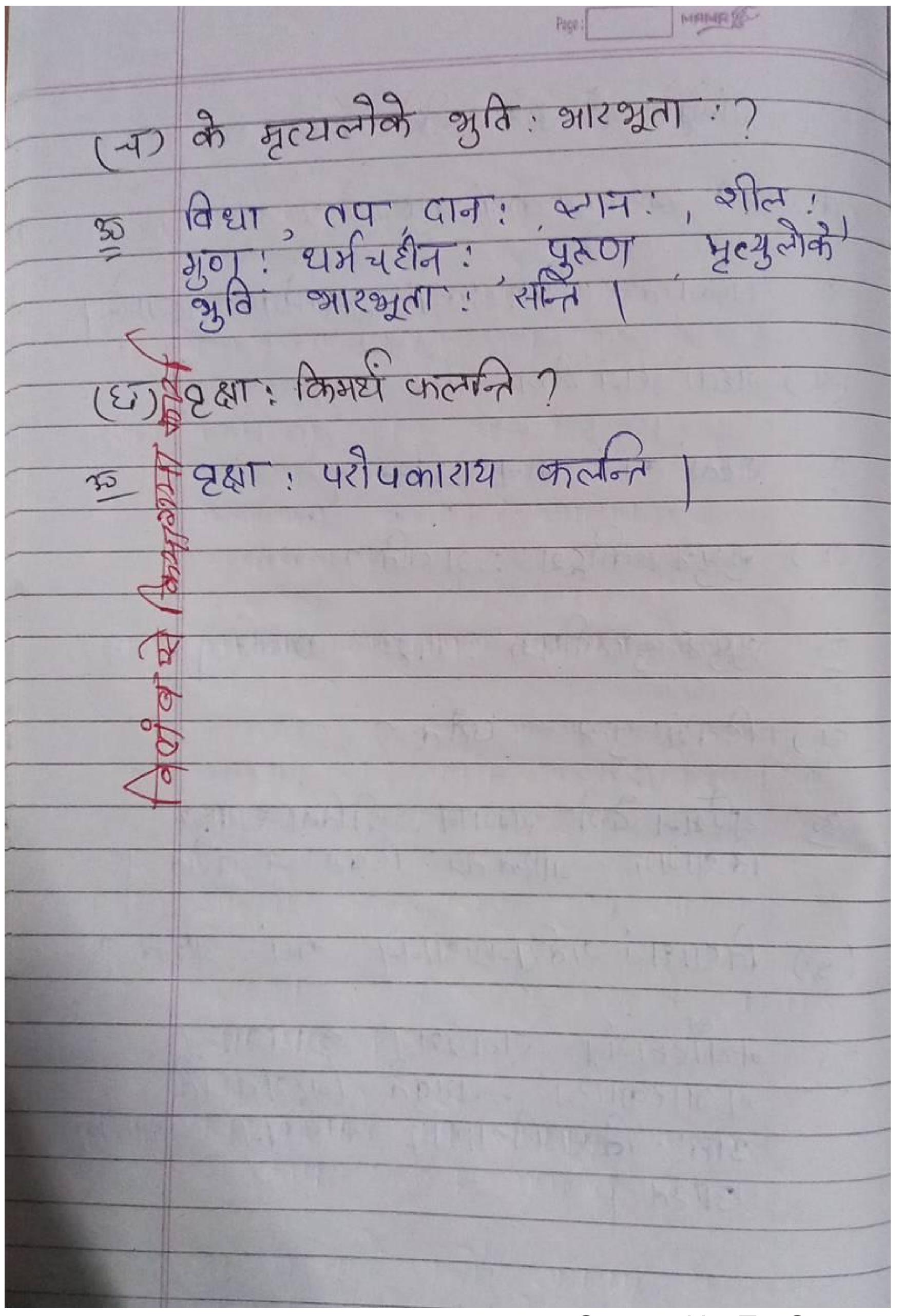
Scanned by TapScanner

|      | to: The total tota |
|------|--|
|      | प्रत्या सुनवार<br>इतस्तर : इधर - उधर<br>रवरितमेवं तेजी से<br>उत्पत्यां उद्यालवार<br>कार्याचिष् किसी के   |
| (an) | जानर: क्राप्त अवसत १<br>वानर: क्राप्त अवसत १   |
|      | वानर : जम्बुव्हस्यीपरि अवसत  |
| (25) | मकारः जान अभिवसतं १  |
|      | मवार ! नद्याम् अनिवसतं।  |
|      | वानरः मकारायं किम अयरधत् १   |
|      | अयर छत्।   |
| (ET) | मवारपट्नी किम स्वादिष्ठम अयरधतः ?  |
| 93   | भवारपत्नी वानस्य ह्वयं स्वित्तम  |



Scanned by TapScanner





Scanned by TapScanner

21041211: न्नानर भिशा माग्ना भागीरध्याम्

संस्कृत मे उत्तर द्वितिए (का) भन्दारवती कारय पुत्री आसीत ? अन्दारवती अभिनस्वाभी नाभकाः द्विभस्य (डब) भन्दाहवती, बाहाम तेम् नप्रविभी मादपवया) अन्दारक्ती द्वरदाहेनं आर्ताप्य यत्वर् ्या) अगम्यन भा तापसा कस्य गृहे अतिथाः अभूत ? अपिति : अभू अभूत । विष्या गृह (ध) महिनी सदन्तं भिशुं कुत्र अक्षिपत्? अधिकारि रूपन्य विश्व त्यलि अग्ने (६.) यदा मृहपति रात्री अयन्म अञाजत अवापसः प्रिम्लां महीत्वार मीदिव

Scanned by TapScanner

|      | DED: THE PARTY OF  |
|------|--|
|      | क्रापनवर शम्याप्तीत।   |
| (-4) | मन्दारवतीम् पुनर्जीविताताम् दृष्टवाः नयोऽपि ब्राह्मणादारकाः क्रम् अकरोतः ?                                   |
| 35   | मन्दारवतीम् पुनर्जीवितालाम् दृष्टवा त्रयोडपि<br>लाम् ब्राह्मणादारकाः व्यक्रम ख्यक प्राप्तु ममलंह<br>अमुर्वना |
| (27) | भन्दारवती कास्य भार्या भज्जाता ?   |
|      | यःतस्य अस्मशस्यायाम् समावित्रव्यः ।  |
|      | मिम्नियित वान्यी में यंभीन पदी ना छीन नारम तिरिवर -  |
| (an) | त्रयः ब्राह्मगदारकाः तस्याः प्रपिग्धः  |
| 35_  | त्रयः श्राह्मठादारकाः तस्याः पािन्   |
| (20) | दितीयः तस्या अस्थीन आदाय<br>आभिश्यमं निवीयुम् अंत्रमान्।   |
| 350  | क्षिय तस्या अस्थीन आदाय<br>भागीर थ्याम भिक्षेप्तम जातवान्।   |

